भारत सरकार
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. **1377** जिसका उत्तर
शुक्रवार, **09 फरवरी**, **2024/20** माघ, 1945 (शक) को दिया जाना है

तटीय पत्तनों से निर्यात

1377. श्री. मद्दीला गुरूमूर्ति :

क्या **पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारतीय पत्तनों से मत्स्य-निर्यात के लिए औसतन कितना समय लगता है और विलंब के कारण इस निर्यात में कितनी हानि हुई है;
(ख) क्या सरकार देश में पत्तनों से शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं के निर्यात में लगने वाले समय को कम करने के लिए किसी योजना पर विचार कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या सरकार की पत्तनों का विकास करने के लिए संकुल बनाने की कोई योजना है; और
(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री
(श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क): प्रसंस्करण संयत्रों से पत्तनों तक प्रसंस्कृत (प्रोसेस) किए गए सी-फूड सामग्री (रिफर कंटेनरों में) को पहुंचने के लिए लगने वाला औसतन समय भिन्न-भिन्न होता है क्योंकि यह प्रसंस्कृत संयत्र के स्थान और पत्तन के स्थान पर पूरी तरह से निर्भर है। प्रसंस्करण संयत्र और कोल्ड स्टोरेज सभी नौ समुद्री राज्यों में स्थित हैं तथा सी-फूड सामग्रियों को कोलकाता, वाईजैग, काकीनाड़ा, कृष्णापट्टिनम, चैन्ने, तुतीकोरिन, कोचिन, जेएनपीटी मुंबई, पीपावाव (गुजरात), मंगलुर/ आईसीडी, काट्टूपल्ली जैसे पत्तनों के माध्यम से भिजवाया जाता है। प्रसंस्करण संयत्र से पत्तनों तक पहुंचने वाली सामग्रियों के लिए औसतन समय भिन्न-भिन्न दो घंटे से 12 घंटे तक हो सकता है क्योंकि यह पत्तन से प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) यूनिट तक की दूरी पर निर्भर करता है।

(ख) (ग) और (घ): सागरमाला कार्यक्रम, पत्तन आधारित विकास को बढ़ावा देने के व्यापक उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु दिनांक 25 मार्च, 2015 को केन्द्रीय मंत्रिमंडल के अनुमोदन के साथ शुरू किया गया था।

सागरमाला कार्यक्रम के उद्देश्यों में से एक इष्टतम अवसंरचना निवेश सहित घरेलू एवं एक्जिम दोनों कार्गो के लिए लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना है। सागरमाला के अंतर्गत, पत्तन-आधारित विकास कुशल एवं आधुनिक पत्तन अवसंरचना तथा बाधा रहित मल्टी मॉडल संपर्कता द्वारा समर्थित लॉजिस्टिक्स इन्टेंसिव उद्योगों पर केन्द्रित है। अब तक 4525 करोड़ रु. वाली कुल 171 परियोजनाओं को आंशिक रूप से वित्त पोषण के लिए सागरमाला योजना के अंतर्गत शामिल किया गया है। 171 परियोजनाओं में से, 55 परियोजनाएं पूरी की जा चुकी है जिनमें मैलेट बंदर, विशाखापट्टनम, कोचिन, पारादीप और चैन्ने के महापत्तनों से जुड़े फिशिंग हार्बरों का आधुनिकीकरण और उन्नयन शामिल है।

*****